देखो यह भ्रमरत जीवन,
सुनो मेरे प्राणों का स्पन्दन,
गीतों का गुंजन,
गीत जिनके लिए
तन-मन-धन सब अर्पण।
निर्मम ठना है रण,
जीवन है संघर्ष चिरन्तन।

संघर्ष चिरन्तन !
समझो न किन्तु कभी मेरे लिए
घृणित है जीवन।
जीवन के बज्रदन्त
भले पीस डालें मुझे
तो भी प्रिय होगा मुझे,
अति प्रिय होगा मुझे,
यह मानव-जीवन !

गले में फांसी का फन्दा ही डाल दें,
पूछें फिर—"एक घड़ी और क्या
जीना तुम चाहोगे ?"
कहूंगा—"धूर्तो !
खोल दो !
तुरत ही फांसी का फन्दा यह खोल दो !"
जीवन के लिए ऐसा क्या है जो
कर न सकूंगा मैं ?